

पाठ-7

नए की जन्म कुंडली : एक पाठ से प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे

विधा — विचार प्रधान निबंध

“एक साहित्यिक की डायरी” का एक अंश

निबन्धकार :- गजानन माधव मुक्तिबोध

लेखक की रचनायें — ‘चाँद का मुँह टेढ़ा है’, ‘भूरि-भूरि खाक धूल’ ।

आलोचनात्मक कृतियाँ — ‘नये साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र’, ‘कामायनी : एक पुनर्विचार’, ‘एक साहित्यिक की डायरी’ । मुक्तिबोध रचनावली में उनकी सम्पूर्ण रचनाएँ संकलित हैं ।

पत्र-पत्रिका सम्पादन — ‘नया खून’ (साप्ताहिक)

भाषा-शैली — विचारात्मक शैली, चित्रात्मक शैली, नाटकीय शैली, तत्समप्रधान शब्दावली, तर्कशीलता

पाठ-परिचय

नए की जन्म कुंडली-एक :- एक विचार प्रधान निबंध है । इस निबंध में लेखक ने व्यक्ति और समाज के बाहरी तथा आंतरिक परिवर्तनों के परिणाम स्वरूप प्राप्त चेतना को ‘नए’ के सन्दर्भ में देखने की कोशिश की है । लेखक का मानना है कि सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक और साहित्यिक परिवर्तन के फलस्वरूप प्राप्त यथार्थ की वैज्ञानिक चेतना को ही नया मानना चाहिए । लेखक के अनुसार ‘संघर्ष एवं विरोध’ के निष्कर्ष को व्यावहारिकता में न जीने के कारण ही हम पुराने को तो छोड़ देते हैं । किन्तु “नए” को वास्तविक रूप में अपना ही नहीं पाते हैं ।

स्मरणीय बिन्दु — लेखक अपने मित्र को अत्यन्त बुद्धिमान समझता हैं । मित्र की तार्किक विश्लेषण क्षमता अद्भुत हैं । उसकी बुद्धि परीक्षण क्षमता में प्रखरता थी, इसलिए लेखक अपने मित्र की प्रतिभा से प्रभावित था । लेखक अपने मित्र के आन्तरिक सौन्दर्य के साथ ही साथ बाह्य सौन्दर्य से भी अभिभूत था । उसके अनुसार सौन्दर्य व्यक्ति के व्यक्तित्व में चार चाँद लगा देता है ।

उसके माथे की लकीरों के सौंदर्य की समता मर्मवचन लिखे हुए कागज़ से करता है। वह कहता है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व में सौंदर्य का महत्त्व तो है, पर उसमें रहस्य भी बना रहना चाहिए तभी वह प्रभावशाली बनता है।

बारह वर्षों बाद लेखक की उससे मुलाकात होती है, तब भी वह उसके आकर्षण में कोई कमी नहीं पाता। लेकिन लेखक को अपने और अपने मित्र के व्यवहार और रुचियों में अंतर दिखाई देता है जैसे—उसका मित्र शैले को 'ओड टु वैस्ट विंड' अर्थात् काव्य और वह 'स्क्वेयर रूट और मानस वन' अर्थात् गणित नहीं समझ पाता। लेखक भावुक है और उसका मित्र तर्कशील एवं बुद्धिवादी। लेखक का मित्र उसके भावनात्मक स्तर तक और लेखक अपने मित्र के बौद्धिक स्तर पर नहीं पहुँच पाता उसका मित्र जिद्दी भी है, वह राजनीति अपना लेता है और साहित्यिक रचनाएँ भी करता है। लेखक को चित्रकला, नृत्यकला और मानव-वंश शास्त्र की जानकारी है। आदतों और व्यवहार के अंतर को लेखक दो ध्रुवों का भेद मानने लगा। लेखक अपने मित्र के विषय में बताता है कि वह कविता लिखते समय अपने को प्रकट करता है तथा सभी इंद्रियों से काम लेते हुए एक आंतरिक यात्रा करता है, इसलिए लेखक कविता को भारतीय परंपरा का विचित्र परिणाम कहता है।

सांसारिक समझौते न करने की आदत ने मित्र के व्यक्तित्व को असामान्य बना दिया। लेखक उसे सामान्य मानता है जो भीतर के असामान्य के उग्र आदेशों को न मानने का सामर्थ्य रखता हो। उसका मित्र जब भी उसके भीतर के असामान्य को उकसा देता था तब वह उसके सामने स्वयं को हीन समझने लगता था। लेखक की सोचने, समझने और कार्य करने की अपनी शैली थी। वह अपने कार्यों से लोगों को प्रसन्न रखता था, अपनी सहजता से सफल और प्रसिद्ध हुआ एवं भद्र कहलाया। वह उसकी व्यावहारिक बुद्धि का परिणाम था। उसका मित्र किसी भी कार्य को इसलिए करता था, क्योंकि वह हर क्षेत्र में व्यवस्था चाहता था। इसके लिए वह अपना सब कुछ कुर्बान कर सकता था। वह समझौतावादी नहीं था। कर्तव्यपालन के प्रति उसमें क्रूरता दया निर्दयता थी। इसलिए वह असफल, नामहीन और आकारहीन रह गया।

लेखक को लगता है कि उसका मित्र एक उल्का-पिंड की तरह है जो सूर्य के पास चक्कर लगाते हुए ब्रह्मांड में भटक गया है। उसका मित्र अपनी जिंदगी को भूल का एक नक्शा कहता है। वह छोटी-छोटी सफलताएँ चाहता था, पर उसे एक भव्य असफलता मिली। वह राजनीति में टिक नहीं पाया, क्योंकि वह आजीवन सिद्धांतों पर चलता रहा और स्वयं को बदलते सामाजिक मूल्यों के अनुरूप नहीं ढाल सका।

एक बार चाँदनी रात में पेड़ के नीचे लेखक चुपचाप उससे बातें कर रहा था। लेखक ने पूछा कि पिछले बीस वर्षों की सबसे महत्वपूर्ण घटना क्या है तो उसने कहा—संयुक्त परिवारों का विघटन। परिवार का अर्थ अब पति, पत्नी और दो बच्चे हो गया है। अमीर बनने की होड़ में सभी संबंध गौण हो गए हैं तथा पैसा प्रधान हो गया

है। सब ओर भौतिकता का प्रसार हो गया है। लेखक को उसका कथन सही लगा कि जिंदगी और ज़माना बदलते जा रहे हैं। लेखक ने पूछा—‘इन वर्षों में सबसे बड़ी भूल कौन—सी हुई है?’ उसने उत्तर दिया—राजनीति और साहित्य के पास समाज—सुधार का कोई कार्यक्रम न होना। राजनीति को जन—कल्याण से ही कुछ भी लेना—देना नहीं है। राजनीति में लोग स्वार्थ—सिद्धि के लिए आते हैं। इसलिए स्वतंत्रता के बाद गरीबी, अशिक्षा, भुखमरी समाप्त नहीं हुई है। आज़ादी के बाद जातिवाद का उदय इसी का दुष्परिणाम है। सर्वत्र अवसरवादी दृष्टिकोण अपनाया जा रहा है। कोई नया नहीं खोजना चाहता। पुराना लौट कर नहीं आ सका और नया पुराने का स्थान नहीं ले सका। समाज में प्रत्येक व्यक्ति अच्छाई त्याग कर बुराई की ओर अग्रसर हो रहा है। कथनी और करनी में अंतर आ गया है। घर के बाहर अन्याय के विरुद्ध उठाने, संघर्ष करने की बातें की जाती हैं परन्तु अपने पराये का भेद सामने आने पर सब चुप हो जाते हैं।

धर्म भावना चली गई किन्तु वैज्ञानिक बुद्धि नहीं आई। नए मानक और मूल्य, परिभाषाहीन तथा आकारहीन हो गए। वे धर्म और दर्शन का स्थान नहीं ले सके।

सप्रसंग व्याख्या—

“जो पुराना है, वह लौटकर.....धर्म और दर्शन का स्थान न ले सके।

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश ‘गजानन माधव मुक्तिबोध’ द्वारा रचित निबंध ‘नए की जन्म कुंडली : एक’ से लिया गया है। लेखक ने यहाँ बताया है कि हम आधुनिकता की दौड़ में पुराने को तो भुला बैठे और नए को अपना नहीं पाए।

व्याख्या—लेखक का कहना है कि हम पुराने को भुला बैठे। पुराना चला गया वह कभी लौटकर नहीं आ सकता। सबसे बड़ी विडम्बना यह रही कि नया भी पुराने के स्थान को ले नहीं सका। धर्म की भावना तो चली गई परन्तु वैज्ञानिक बुद्धि भी नहीं आई, जिससे हम नए को कुछ समझते। प्राचीनकाल में धर्म हमारे प्रत्येक पक्ष को अनुशासित करता था चाहे वह राजनैतिक पक्ष हो या सामाजिक, वैज्ञानिक मानवीय दर्शन ने और दृष्टि ने धर्म का स्थान नहीं लिया। इसलिए हमारी अतः प्रवृत्तियाँ हमें जिस प्रकार चालित करती हैं हम उसी प्रकार चलते रहते हैं। हम अपने आपको अनुशासित किए बिना नया—नया चिल्लाने लगे परन्तु बिना आत्मानुशासन के नया क्या है? यह हम नहीं जान सके आखिर ऐसा क्यों हुआ? हमारे सभी मान मूल्यों को धर्म परिभाषित करता था। अब ये सभी मूल परिभाषाहीन हो गए। अब इनका कोई निश्चित स्वरूप नहीं रहा, ये निराकार हो गये। वे दृढ़ और नया जीवन नए व्यापक मानसिक सत्ता के अनुशासन का रूप धारण नहीं कर सके। जिस अनुशासन की परिवार और समाज की आवश्यकता थी वह नहीं रहा। नए मान मूल्य धर्म, दर्शन का स्थान नहीं ले सके।

विशेष—खड़ी बोली।

- तत्सम शब्दावली।
- समाज का गहन—गंभीर विश्लेषण।
- विचारात्मक शैली।
- मनुष्य की अवसरवादी, प्रवृत्ति की ओर संकेत।

अभ्यास—प्रश्न (उत्तर सहित)

1. लेखक व्यक्ति को बुद्धिमान क्यों मानता था? तथा लेखक के मित्र ने 'इन वर्षों की सबसे बड़ी भूल' किसे माना है?

उत्तर— लेखक उस व्यक्ति को बुद्धिमान इसलिए मानता था क्योंकि वह अपने विचारों को गंभीरतापूर्वक लेता था। वे उसके लिए धूप और हवा — जैसे स्वाभाविक प्राकृतिक तत्व थे। लेखक को लगता था कि यह व्यक्ति अपने को प्रकट करते समय और सभी इंद्रियों से काम लेते हुए एक आंतरिक यात्रा कर रहा है। उसका दिमाग बहुत तेज था। वह प्रत्येक बात को कुशलता से पकड़ता था।

लेखक के मित्र ने इन वर्षों की सबसे बड़ी भूल 'राजनीति के पास समाज—सुधार का कोई कार्यक्रम न होना' को माना है। इसी के साथ—साथ साहित्य के पास भी सामाजिक सुधार का कोई कार्यक्रम न होना भी बड़ी भूल है। यह सोचना गलत था कि हम सामान्य बातें करके और राजनैतिक तथा साहित्यिक आंदोलन के द्वारा वस्तु स्थिति में परिवर्तन ला देंगे।

2. लेखक ने 'व्यावहारिक सामान्य बुद्धि' किसे कहा है।

उत्तर— लेखक ने 'व्यावहारिक सामान्य बुद्धि' उसे कहा है जिससे अधिक—से—अधिक लोगों को प्रसन्न किया जा सके। लेखक जब कोई कार्य करता है तो लोग उससे प्रसन्न होते थे। लेखक के अनुसार उसका मित्र इसलिए काम करता है कि एक बार कोई काम हाथ में लेने पर उसे अधिकारी ढंग से भली—भांति कर ही डालना चाहिए।

3. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए।

1. सांसारिक समझौता—

किसी कार्य को सही रूप में पूर्ण करते समय अनेक सांसारिक बाधाएँ उपस्थित हो जाती हैं। यह सांसारिक बाधाएँ अपनो में सुख—सुविधा, धन—यश की चाह आदि किसी भी प्रकार की हो सकती हैं।

जो शक्तिशाली है वह इन बाधाओं से समझौता नहीं करता, परन्तु सुविधाभोगी या संघर्षहीन व्यक्ति इन कठिनाइयों से समझौता कर लेता है। यह समझौता भविष्य में व्यक्ति, समाज और देश सभी के लिए विनाशकारी सिद्ध होता है। लेखक के अनुसार उसके मित्र ने कभी भी सांसारिक समझौता नहीं किया।

2. सामान्य-असामान्य तथा साधारण-असाधारण का अंतर जब हम किसी कार्य को आदर्शों एवम् सिद्धांतों की कसौटी पर पूर्ण करना चाहते हैं तो हम अपने अंदर से उठने वाले असामान्य-असाधारण आदेश को मानते हैं।

लेखक की दृष्टि में उसका मित्र असाधारण और असामान्य है। वह अपनी धुन, विचार या एक कार्य पर सबसे पहले खुद को और परिवार तथा अन्य लोगों को भी कुर्बान कर सकता था।

3. संयुक्त परिवार का हास-

समाज की बुनियाद परिवार है। मानव के चरित्र का विकास परिवार में रहकर ही होता है। किसी देश का चारित्रिक पतन उसके विकास में सबसे बड़ी बाधा है। परिवार में रहकर ही बच्चे सांस्कृतिक विरासत प्राप्त करते हैं। अनेक कारणों से परिवार टूटते गये। संयुक्त परिवारों का स्थान एकल परिवार ने ले लिया। हमारी व्यवस्था के पास ऐसी कोई नीति नहीं है कि कार्य और घर को जोड़ा जा सके। अतः विचारों और संस्कारों का निरन्तर हास होता गया।

4. पाठ के आधार पर आप समाज में किन बदलावों को लाना चाहेंगे? कुछ सुझाव दीजिए।

उत्तर- हमें इस सत्य को समझना होगा कि हमारे पूर्वजों द्वारा अपनाई गई धार्मिक मान्यताएँ और रीति-रिवाज वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित थे। अतः हमें आज धर्म का पालन करते समय वैज्ञानिक बुद्धि को भी साथ लेकर चलना होगा।

उदाहरणतः धर्म के नाम पर, त्योहार मानने के रीतिरिवाज के नाम पर चौराहों पर खाना डालकर उन्हें गंदा करना निंदनीय है। धर्म के सही स्वरूप को जानें। स्वच्छता ही हमसे बड़ा धर्म है।

कर्म-कांड से अधिक उसमें निहित मूल भावना को महत्व दें।

कपड़ों से अधिक विचारों से आधुनिक बनें।

धर्म, जाति, संप्रदाय के नाम पर अशांति, उपद्रव न फैलायें। आदि।

(छात्र स्वयं अपने अनुभवों से उदाहरण दे सकते हैं)